International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 6 Issue I Ser. II || January. 2017 || PP 74-77

क्रांतिकारी आंदोलन में नौजवान भारत सभा की भूमिका

डा. ईशा शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
एम एम एच कॉलेज, गाजियाबाद

शोध सारांश :
भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में पंजाब के युवकों द्वारा स्थापित ''नौजवान भारत सभा'' की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। पंजाब नेशनल कॉलिज से जिस क्रांतिकारी चेतना का प्रादुर्भाव हो चुका था उसके लिए एक मंच की आवश्यकता थी। क्रांति की चेष्टाएं गुप्तरूप से ही की जा सकती थीं परन्तु जनता को भी इसके लिए तैयार करना आवश्यक था। गांधीवादी आंदोलन से ऊबी हुई जनता में उग्र राष्ट्रीय भावना जगाने हेतु तथा एक प्रकट मंच की आड़ में गुप्तरूप से क्रांति हेतु प्रयत्न जारी रखने के उद्देश्य से मार्च 1926 में, भगवतीचरण वोहरा, भगत सिंह, सुखदेव, यशपाल आदि ने लाहौर में नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी।[1]

इस सभा की स्थापना की कल्पना नेशनल कॉलेज में पढ़ते समय ही क्रांतिकारी साथियों ने की थी। कॉमरेड रामचंद्र ने लिखा है कि जिन दिनों भगवतीचरण और वे अपने एक मित्र प्यारेलाल दुग्गल से फ्रेंच सीखते थे उन्हीं दिनों, एक दिन बहस के दौरान भगवतीचरण ने युवकों का एक संगठन बनाने का सुझाव दिया उससे पूर्व भगत सिंह भी इसी प्रकार का संगठन बनाने के विषय में सोच रहे थे। इस मीटिंग में प्रिंसिपल छबीलदास, मास्टर पारसराम, मास्टर गुरुदत्त, भगवतीचरण, भगत सिंह, सुखदेव, जयदेव, बाबू सिंह, गणपतराय, जसवंत सिंह, सोमदेव, बनारसी दास और मैं उपस्थित थे।[2]

यूरोपीय इतिहास पढ़ने के कारण विद्यार्थी यंग आयरलैंड, यंग टर्की और यंग इटली आंदोलनों से तथा रूसी क्रांति से अत्यधिक प्रभावित थे। इसी कारण भगत सिंह इस संगठन का नाम **''यंग इंडिया ऑरगनाइजेशन''** रखना चाहते थे,[3] लेकिन कालांतर में सभी साथियों की सलाह व विचार विमर्श के पश्चात इसका नाम हिंदी में **''नौजवान भारत सभा''** कर दिया गया। इस सभा के संगठन में, सदस्यता के लिए नियम बनाने में तथा इसका संविधान बनाने में छः माह का समय लगा। नौजवान भारत सभा की स्थापना के समय इसका उद्देश्य था – पूर्ण स्वराज प्राप्त करना। इसकी स्थापना का भाई परमानन्द सरीखे अनुभवी क्रांतिकारियों ने भी स्वागत किया।[4] अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए साथियों ने हर संभव तरीके का प्रयोग करने में विश्वास व्यक्त किया।[5] इसके पश्चात इसका संविधान बनाने हेतु परीमहल, लाहौर में अनेक बार सभाएं आयोजित की गईं। भगत सिंह ने सभा के **''लैटरहैड''** छपवाए थे जिनपर **''नौजवान भारत सभा''** और **''यंग इंडिया एसोसिएशन''** दोनों नाम थे। इन पर एक नारा भी छपा था – **"Service, Sacrifice and Suffering".**[6]

नौजवान भारत सभा क्रांतिकारी आंदोलन का खुला मंच था। इस सभा का कार्य प्रकट था और सार्वजनिक जीवन से संपर्क रखने वाले विश्वस्त कार्यकर्ताओं को उसमें सुविधा से लपेटा जा सकता था ''16 वर्ष से 35 वर्ष की आयु के युवक इस सभा के सदस्य हो सकते थे।''[7] श्री भगवतीचरण वोहरा और भगत सिंह इसके मुख्य सूत्रधार थे। भगत सिंह उसके प्रथम महामंत्री (जनरल सेक्रेटरी) और भगवतीचरण वोहरा प्रथम प्रचारमंत्री चुने गए। सुखदेव, एहसान इलाही, यशपाल और धनवंतरि भी सभा के प्रमुख एवं सक्रिय सदस्यों में से थे। उस समय समाजवाद की ओर रूझान रखने वाले कांग्रेस के प्रायः सभी नौजवान खिंचकर सभा में आ गए थे।[8] इस संगठन से बहुत लाभ हुआ। इसका कार्य प्रकट रूप से होने के कारण सार्वजनिक जीवन में काम करने वाले योग्य कार्यकर्ताओं का सहयोग मिलने लगा। खास प्रयोजन यह भी था कि क्रांति शुरू होने के बाद यह संगठन जनता से संपर्क बनाए रख सकता था और नए कार्यकर्ता तैयार कर सकता था। पंजाब कांग्रेस के वामपक्षी नेताओं ने भी उस समय नौजवान भारत सभा को सहयोग दिया था।

नौजवान भारत सभा का कार्यक्रम कांग्रेस की गांधीवादी सुधारवादी नीति की आलोचना कर जनता को उग्र राजनैतिक कार्यक्रम की प्रेरणा देना और जनता में क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करना था और उस समय की परिस्थितियों में प्रकट आंदोलन से क्रांति का जितना प्रचार संभव था, नौजवान भारत सभा ने किया। यह सभा नैतिक, साहित्यिक और सामाजिक विषयों पर बहसें तथा स्वदेशी वस्तुओं, एकता, साधारण जीवनस्तर, शारीरिक दृढ़ता, भारतीय संस्कृति और सभ्यता आदि विषयों पर व्यख्यान आयोजित करती रहती थी।[9] इस सभा ने आम सभाओं, बयानों, पर्चों आदि के माध्यम से क्रांतिकारियों के उद्देश्यों और उनके विचारों का बहुत प्रचार किया। वह प्रचार का एक सशक्त माध्यम बन गई थी। पंजाब ही नहीं सीमान्त प्रांत एवं उत्तर प्रदेश में भी नौजवान भारत सभा का काफी प्रचार हुआ और उसने कांग्रेस की गतिविधियों को भी प्रभावित किया। कराची कांग्रेस के समय वहां हुए नौजवान भारत सभा के अखिल भारतीय अधिवेशन तथा उसके कार्यों से राष्ट्रीय आंदोलन में प्राप्त हुए महत्वपूर्ण योगदान की ओर विशेष रूप से ध्यान देना पड़ा।

इस समय पुरानी गदर पार्टी के नेता, नए क्रांतिकारी दल के भगत सिंह जैसे सदस्य और सोहन सिंह जोश जैसे मार्क्सवादी नेता सामान्यरूप से नौजवानों के संगठन की आवश्यकता महसूस कर रहे थे। इसीलिए तीन क्रांतिकारी धाराएं मिलकर एक बड़ी धारा बनती हुई आगे बढ़ रही थी।[10] नौजवान भारत सभा के सदस्यों का झुकाव भी समाजवाद की ओर था। नौजवान भारत सभा की स्थापना के समय उसके लक्ष्य और उसकी प्राप्ति के मार्ग पर काफी बहस हुई थी। आमतौर से इस बात पर सहमति हो गई थी कि पूर्ण स्वाधीनता और किसान–मजदूर राज्य कायम करना भारतीय जनता का लक्ष्य होना चाहिए और मजदूरों के सामने इसी लक्ष्य को सामने रख कर उन्हें संगठित किया जाए।[11] साथ ही भारत के नवयुवकों के मन में भारतीयता की भावना को उत्पन्न किया जाए। शोषण, दरिद्रता, असमानता आदि की संसार व्यापी समस्या पर अध्ययन एवं विचार कर वे लोग इस परिणाम पर पहुंचे थे कि पूर्ण स्वाधीनता के लिए केवल राजनैतिक ही नहीं बल्कि आर्थिक स्वाधीनता भी आवश्यक है।[12] कालांतर में अगस्त 1928 में नौजवान भारत सभा ने कुछ उग्र कांग्रेस नेताओं के साथ मिलकर **''फ्रैण्डस् ऑफ रषिया वीक''** मनाया था। इसी महीने में ही ''**सभा**'' ने रूसी क्रांति की प्रशंसा करने हेतु एक सभा की आयोजना भी की थी।[13]

इस प्रकार स्पष्ट है कि नौजवान भारत सभा अपने उद्देश्यों व विचारों में काफी आगे बढ़ी हुई थी। समाजवादी विचारधारा युवकों को काफी हद तक प्रेरित कर रही थी। आगे चलकर जब नौजवान भारत सभा के सदस्य हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संगठन (हिसप्रस) में शामिल हो गए तो इन्होंने समाजवाद को ही पुनः अपना ध्येय घोषित किया था। नौजवान भारत सभा एक प्रकार से हिसप्रस की भूमिका थी।

नौजवान भारत सभा द्वारा काकोरी षडयंत्र के मामले में क्रांतिकारियों के फांसी पर लटकाए जाने के विरोध में अनेक स्थानों पर सार्वजनिक विरोध तथा प्रदर्शन किए गए। उनकी स्मृति में लाहौर में शहीद दिवस भी मनाया गया।[14] भगवती भाई और भगत सिंह ने प्रयत्नपूर्वक 18 वर्षीय नवयुवक अमरशहीद करतार सिंह सराभा की बरसी ब्रेडला हॉल में सार्वजनिक रूप से मनाकर उनके चित्र का उद्घाटन किया था।[15] भगत सिंह ने शहीद करतार सिंह का एक छोटा सा चित्र खोज निकाला था। उस चित्र के आधार पर भगवती भाई ने अपने खर्चे से करतार सिंह का एक बहुत बड़ा चित्र बनवा लिया। चित्र पर श्वेत खद्दर का एक पर्दा लटका दिया गया था जिसे दुर्गा भाभी व सुशीला देवी ने अपनी उंगलियों के रक्त के छींटों से रंग दिया था।[16] यह दुर्गा भाभी द्वारा अपने रक्त का अर्घ्य देकर क्रांति की उस मशाल को और अधिक प्रज्ज्वलित करने का आह्वान था। यह एक क्रांतिकारिणी महिला की सोच थी। संभवतः एक क्रांतिकारी द्वारा दूसरे क्रांतिकारी को इससे अच्छी श्रद्धांजलि और कोई नहीं हो सकती थी। ''इस अवसर पर मुख्य भाषण भी भगवतीचरण ने ही दिया था जिसने जनता को अत्यधिक प्रभावित किया।[17]

नौजवान भारत सभा का प्रथम प्रान्तीय सम्मेलन 13 अप्रैल 1929 को (जलियांवाला बाग की बरसी के दिन) अमृतसर में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का अध्यक्ष श्री केदारनाथ सहगल को चुना गया।[18] इस सम्मेलन में नौजवान भारत सभा के आदर्श में परिवर्तन करने का निश्चय किया गया। इसके उद्देयों को निम्नलिखित रूप में परिवर्तित कर दिया गया :–

1.सम्पूर्ण भारत में किसानों एवं मजदूरों के एक पूर्ण स्वाधीन गणराज्य की स्थापना करना,
2.एक संयुक्त भारतीय राष्ट्र की स्थापना हेतु देश के नवयुवकों में देशभक्ति की भावना को जागृत करना,
3.ऐसे आर्थिक औद्योगिक और सामाजिक आंदोलनों के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के साथ सहायता प्रदान करना जबकि वे साम्प्रदायिक भावनाओं से स्वतन्त्र हों, इस भावना के साथ कि इससे हम अपने उद्देश्य ''श्रमिकों व किसानों का पूर्ण स्वतन्त्र राज्य'' के निकट पहुंचेंगे एवं
4. मजदूरों व किसानों को संगठित करना।[19]

सम्मेलन में संगठन सम्बन्धी प्रस्ताव में कहा गया कि पंजाब के जिलों और गाँवों में सभा की शाखाएँ संगठित की जाएंगी। सभा की केन्द्रीय समिति चुनी गई, उसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख आदि विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायों के लोग थे।[20]

प्रचार के दो मुख्य साधन हैं– वाणी और लेखन। भगवतीचरण जी का दोनों पर समान रूप से अधिकार था। वे नौजवान भारत सभा के प्रचारमन्त्री थे और उन्होंने इस रूप में पूर्ण कुशलता से कार्य किया। उनके भाषण तो विद्यार्थियों व नौजवानों में विशेष रूप से लोकप्रिय थे ही, साथ ही उन्होंने देशवासियों को सम्बोधित करते हुए कई छोटी–छोटी पुस्तिकाएं (पैम्फलेट) भी लिखी थीं जो अब उपलब्ध नहीं हैं। उस समय उनकी लघु पुस्तिका **''मासेज ऑफ इन्डिया''** पंजाब के नौजवानों में काफी लोकप्रिय थी।[21]

भगवतीचरण जी के लिखे हुए दो दस्तावेज ही उपलब्ध हैं। उनमें प्रथम है –''नौजवान भारत सभा'' का घोषणा पत्र। यह उनकी वैचारिकता, कूटनीति, दूरदर्शिता और सशक्त शैली का स्पष्ट प्रमाण है। आदर्श के लिए संघर्षरत युवकों को सम्बोधित करते हुए घोषणा पत्र में कहा गया था –''भारत की आजादी के पैरोकारों के पास कोई कार्यक्रम नहीं है और उनमें उत्साह का अभाव है। चारों तरफ अराजकता है। लेकिन किसी राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में अराजकता (यहाँ अराजकता से भगवतीचरण जी का मतलब अराजकतावाद से नहीं है उनका मतलब सरकार की नीतियों के विरोध में

उत्पन्न होने वाली एक क्रांतिकारी उथल–पुथल से है) एक अनिवार्य तथा आवश्यक दौर है। ऐसी ही नाजुक घड़ियों में कार्यकर्ताओं की ईमानदारी की परख होती है। उनके चरित्र का निर्माण होता है, सही कार्यक्रम बनता है।[22]

यह घोषणा पत्र उस समय नौजवानों का मार्गदर्शक बन गया था। नौजवानों ने इससे प्रेरणा ली और भगवती जी के शब्दों को अन्तिम वाक्य मान उन्हीं के द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चल पड़े। इस घोषणा पत्र में जीवन, समाज, प्रत्येक क्षेत्र पर दृष्टि डाली गई थी। समस्या के साथ–साथ उसका समाधान भी प्रस्तुत किया गया था। इस पत्र द्वारा क्रांति का मर्मोद्घाटन भी हुआ। यह ऐतिहासिक दस्तावेज 6 अप्रैल 1928 को तैयार किया गया था। यह अंग्रेजी में था तथा प्रचारमंत्री श्री भगवतीचरण वोहरा की ओर से अरोर बंस प्रैस, लाहौर से मुद्रित व प्रकाशित किया गया था।[23]

नौजवान भारत सभा श्री भगवतीचरण व भगत सिंह के नेतृत्व में वांछित प्रगति कर रही थी। जून 1928 में नौजवान भारत सभा ने कांग्रेस के बारदोली सत्याग्रह आंदोलन का समर्थन किया तथा इसके प्रचार के लिए सभाएँ भी आयोजित कीं कि बारदोली का सत्याग्रह आंदोलन बम्बई सरकार की स्वेच्छाचारी व निरंकुश नीतियों के विरूद्ध ''आर्थिक विरोध'' है।[24] जुलाई में, ''कीर्ति किसान पार्टी'' के नेता सोहन सिंह जोश नौजवान भारत सभा की अमृतसर शाखा के अध्यक्ष चुने गए जिससे ''**सभा**'' और कीर्ति किसान पार्टी का संबंध और मजबूत हो गया। प्रकट रूप में तो नौजवान भारत सभा कार्य कर रही थी लेकिन गुप्तरूप से साथी अभी कोई कदम नहीं उठा पा रहे थे।

1928 के अमृतसर सम्मेलन के बाद नौजवान भारत सभा का दूसरा अधिवेशन लाहौर में 22 फरवरी से 24 फरवरी 1929 तक हुआ। इस समय हुए चुनाव में भी अधिकांश पद कीर्ति किसान पार्टी ने ही प्राप्त कर लिए। कीर्ति पार्टी के सोहन सिंह जोश, एम.ए. मजीद और हरसिंह चकवालिया क्रमशः अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सेक्रेटरी चुने गए।[25] बाद को मेरठ षडयन्त्र के सिलसिले में गिरफ्तार हो जाने के कारण रामकिशन, दौलतराम और अहसान इलाही इन पदों पर आसीन हुए।[26] भगवतीचरण, स. भगत सिंह, सुखदेव, यशपाल आदि साथियों के क्रांतिकारी दल ''हिसप्रस'' के कार्यों में व्यस्त हो जाने से अब वे लोग इस ओर ध्यान नहीं दे पाते थे। लाहौर षडयन्त्र केस में वारन्ट निकल आने पर तो सभा में कार्य करना असम्भव ही हो गया था। कालांतर में इसकी गुप्त गतिविधियों की भनक पुलिस को लग गई तथा 3 मई 1930 को यह सभा ''राजद्रोहात्मक सभा कानून'' के अन्तर्गत अवैध घोषित कर दी गई।[27]

इस प्रकार नौजवान भारत सभा ने पंजाब के राजनैतिक इतिहास में 1926–29 के मध्य युवकों में ब्रिटिश विरोधी तथा क्रांतिकारी विचारों को फैलाकर महत्वपूर्ण कार्य कर दिखाया। इसका प्रभाव तीन प्रकार से देखा जा सकता है। सर्वप्रथम, इसने अन्य पार्टियों द्वारा किए जाने वाले ब्रिटिश विरोधी आंदोलनों का समर्थन किया और उनमें भाग लिया। उन्होंने ब्रिटिश वस्तुओं का तथा साईमन कमीशन का बहिष्कार किया। उन्होंने ट्रेड डिस्प्यूट बिल व पब्लिक सेफ्टी बिल के विरूद्ध आंदोलन किया। दूसरे, ''कीर्ति ग्रुप द्वारा'' आयोजित मजदूर किसान सम्मेलनों के माध्यम से कम्युनिस्ट विचारों को प्रदर्शित करके तथा तीसरे ''काकोरी दिवस'' आदि के माध्यम से युवको में सरकार विरोधी भावनाएँ जागृत करके।

संदर्भ सूची

1- फाइल नं. 130, गृह विभाग {राजनीतिक} भारत सरकार, शिव वर्मा– संस्मृतियां, समाजवादी साहित्य सदन, कानपुर, 1974, पृ. 21 एवं यशपाल – सिंहावलोकन {भाग प्रथम} लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1984, पृ. 92
2- कामरेड रामचन्द्र – नौजवान भारत सभा एण्ड हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, दिल्ली, 1986, पृ. 14/15
3- कामरेड रामचन्द्र – नौजवान भारत सभा एण्ड हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, दिल्ली, 1986, पृ. 14/15
4- आई0 मल्किार्जुन शर्मा – ''रोल ऑफ रिवोल्यूशनरीज इन दि फ्रीडम स्ट्रगल'', मार्क्सिस्ट स्टडी फोरम, हैदराबाद 1987, पृ. 202
5- कामरेड रामचन्द्र – पूर्वोक्त
6- वही
7- वही – पृ. 18
8- शिव शर्मा – ''शहीद भगत सिंह की चुनी हुई कृतियां'' – समाजवादी साहित्य सदन, कानपुर, 1987, पृ. 22
9- फाइल नं. 130, गृह विभाग (राजनैतिक) भारत सरकार 1930
10- सोहन सिंह जोश – माई मीटिंग्स विद भगत सिंह एण्ड आल अदर अर्ली रिवोल्यूशनरीज – दिल्ली, 1976, पृ. 11
11- राजा राम शास्त्री – अमर शहीदों के संस्मरण, साधना साहित्य मंदिर प्रकाशन, कानपुर, 1981, पृ. 93
12- शिव शर्मा – पूवोक्त, पृ. 21
13- फाइल नं. 130, गृह विभाग (राजनैतिक) भारत सरकार।
14- जितेन्द्र नाथ सान्याल – पूर्वोक्त, पृ.34 एवं के. के. खुल्लर – पूर्वोक्त, पृ.38।
15- क्रांतिकारिणी दुर्गा भाभी जी से लिए गए साक्षात्कार से एवं यशपाल –सिंहावलोकन भाग (एक) पृ.93
16- यशपाल – पूर्वोक्त, पृ.94 एवं दुर्गा भाभी जी से लिए गए साक्षात्कार से।
17- वही।

18- फाइल नं. 130, गृह विभाग (राजनैतिक) भारत सरकार 1930
19- फाइल नं. 130, गृह विभाग (राजनैतिक) भारत सरकार 1930
20- सोहन सिंह जोश – माई मीटिंग्स विद भगत सिंह एण्ड ऑन अदर अर्ली रिवोल्यूशनरीज दिल्ली, 1978, पृ.13
21- शिव वर्मा – ''संस्मृतियां'' – तीसरा संस्करण, कानपुर, पृ.157
22- शिव वर्मा – ''शहीद भगत सिंह की चुनी हुई कृतियां'' – समाजवादी साहित्य सदन, कानपुर, 1987, पृ.249
23- ''नौजवान भारत सभा का घोषणा पत्र'' – शिव वर्मा द्वारा – शहीद भगत सिंह की चुनी हुई कृतियां – पृ.254 पर उद्धृत।
24- फाइल नं. 130 गृह विभाग (राजनैतिक) भारत सरकार 1930
25- फाइल नं. 130 गृह विभाग (राजनैतिक) भारत सरकार 1930
26- वही।
27- के.के. खुल्लर – पूर्वोक्त, पृ.38